कृषिवानिकी समाचार पत्र
Agroforestry Newsletter

जुलाई-सितम्बर, 2005, अंक 17, संख्या 3

July - September, 2005, Vol. 17, No. 3

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी.284 003 (उ.प्र.)

National Research Centre for Agroforestry, Jhansi-284 003 (U.P.)

उप महा निदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन-II, नई दिल्ली द्वारा केन्द्र पर भ्रमण

माननीय डा. जे.एस. सामरा, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन) एवं डा. के.आर. सोलंकी, सहायक महानिदेशक (कृषिवानिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन- II, नई दिल्ली द्वारा 17-18 सितम्बर, 2005 को इस केन्द्र का भ्रमण किया गया। केन्द्र के निदेशक डा.एस.के. ध्यानी द्वारा उनका स्वागत किया गया। इन्होंने केन्द्र के प्रक्षेत्र एवं प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया तथा विभिन्न परियोजनाओं की सराहना की एवं मौके पर अपने विचार व सुझाव दिये। गणेशगढ़ गांव में किये जा रहे विकास कार्यों की भी सराहना की। गाँव में जैट्रोफा एवं ऑवले के किये गये वृक्षारोपण में

VISIT OF DEPUTY DIRECTOR GENERAL (NRM), ICAR, NEW DELHI

Hon'ble Dr. J.S. Samra, DDG (NRM) along with Dr. K.R. Solanki, ADG (AF), ICAR, KAB-II, New Delhi visited the Centre on 17th-18th September, 2005. Dr. S.K. Dhyani, Director welcomed dignitaries. They inspected on going research activities at the research farm and laboratories. DDG appreciated the experiments in the field and gave on spot suggestions for further improvement. He showed keen interest in developmental activities initiated in the village "Ganeshgarh." He was overwhelmed after inspecting Jatropha and

काफी रूचि दिखाई तथा किसानों से कहा कि इस केन्द्र द्वारा किये जा रहे विकास कार्य में आप रूचि लेकर इस कार्य को आगे बढ़ाये। उन्होंने जोर देकर कहा कि ग्रामीण आर्थिक एवं पर्यावरण सुधार के लिये कृषिवानिकी का विकास बहुत जरूरी है। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि गणेशगढ़ के किसान अन्य गांव के व्यक्तियों के लिये एक उदाहरण बन सके।

aonla plantation in the village and urged the farmers to participate actively in the projects and programes of the Centre. He emphasized the role of agroforestry in the betterment of agriculture environment and rural economy. He desired that the farmers of Ganeshgarh should set an example for other villages to follow.

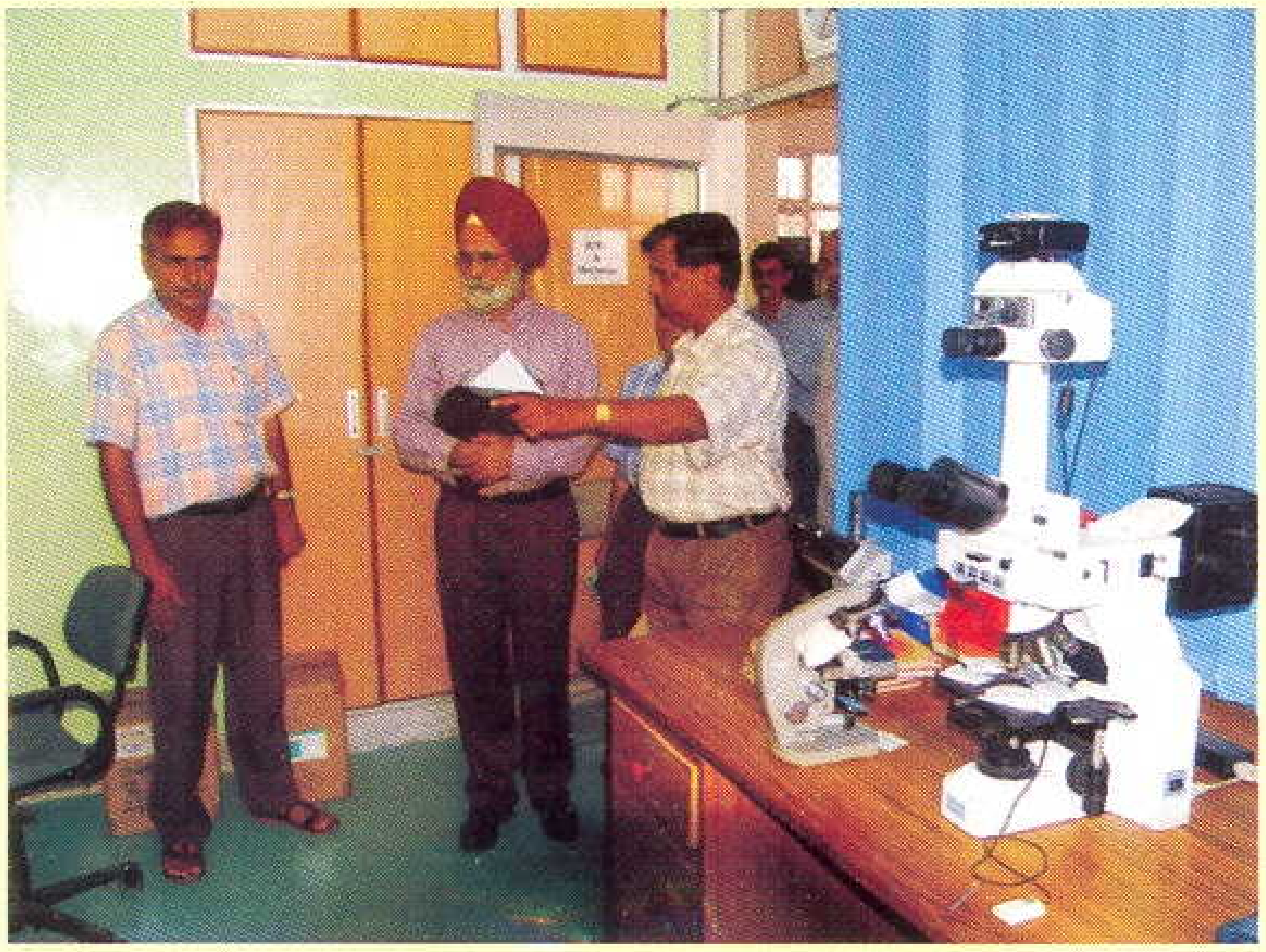

फल वृक्षों में कलम एवं गूटी बाँधने का प्रशिक्षण सम्पन्न

केन्द्र द्वारा फल वृक्षों जैसे बेर, ऑवला में कलम बाँधने तथा मुसम्मी एवं नीबू में गूटी बाँधने के दो दिवसीय (11 एवं 12 जुलाई, 2005) प्रशिक्षण आयोजित किए गये। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम दतिया जिले के गाँव सनौरा एवं झाँसी जिले के गाँव हंसारी-महराजसिंह नगर में कराये गये। कार्यक्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक (उद्यानिकी) डा. आर.के. तिवारी द्वारा बेर, ऑवला में कलम बाँधने एवं नीबू तथा मुसम्मी में गूटी बाँधने की विधि का विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने बताया कि कलम बाँधने के उपरान्त देशी बेर उसी वर्ष में कलमी फल प्रदान करने लगता है तथा कलमी ऑवला चौथे वर्ष में फल देना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रशिक्षण में गाँव सनौरा (जिला दतिया) में 26 कृषक एवं ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया। ग्राम हंसारी-महराजसिंह नगर (जिला झाँसी) में 17 कृषक एवं ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा. आर. पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया।

निदेशक की कलम से.........

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण भारत का विकास कृषि वानिकी द्वारा ही संभव हैं क्योंकि यह पद्धति विपरीत मौसम में भी कुछ न कुछ उत्पादन देने में सक्षम है जबकि उपयुक्त मौसम में औसत से अधिक उत्पादन/लाभ सुनिश्चित करती है। कृषक अपनी आवश्यकता तथा सुविधा के अनुसार फसल व वृक्ष का चुनाव कर सकते हैं। विभिन्न परिस्थितियों जैसे सिंचित-असिंचित, हल्की-भारी, समतल - ऊबड़ खाबड़ तथा विभिन्न जलवायु दशाओं में कृषिवानिकी के लिए उपयुक्त पेड़ व फसल प्रजातियों का चयन देश स्तर पर किया जा चुका है। आगे, उनके विकास का कार्य प्रगति पर है। कृषि वानिकी पद्धतियों की उपयुक्तता का प्रदर्शन भी कृषकों के प्रक्षेत्र पर जगह-जगह किया जा रहा है। सभी इच्छुक किसान इस संदर्भ में अद्यतन अग्रणी तकनीकी जानकारी इस केन्द्र से निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं और केन्द्र पर स्वयं आकर शोध प्रगति की जानकारी ले सकते हैं।

कृषि वानिकी समाचार पत्र के पाठकों को मेरी शुभकामनाएं।

(एस.के. ध्यानी)

वन महोत्सव कार्यक्रम

केन्द्र के तत्वाधान मे विकास खण्ड, बबीना के ग्राम गणेशगढ़ में 20 जुलाई को वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री इकबाल सिंह, मुख्य वन संरक्षक, झाँसी थे। अपने मुख्य अतिथीय उद्बोधन में श्री सिंह ने किसान भाईयों का आह्वान करते हुए कहा कि वन भूमि सीमित है तथा वन क्षेत्र

बढ़ाने का एक ही विकल्प कृषिवानिकी है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि वृक्षारोपण के लिए आर्थिक एवं सामाजिक पहल जरूरी है। उन्होंने अपील की कि ऐसे पौधे लगायें जिससे किसान भाइयों की आर्थिक आमदनी बढ़े। जैट्रोफा (रतनजोत) के बारे में कहा कि यह अच्छी आमदनी देगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र के निदेशक डा. शिव कुमार ध्यानी ने वन आवरण बढ़ाने में किसानों की भागीदारी पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जैट्रोफा एवं करंज से जैव डीजल प्राप्त होता है जिसका किसान भाई ट्रैक्टर तथा पम्प सेट आदि में भी उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने महामहिम राष्ट्रपति के उद्‌बोधन का जिक्र करते हुए कहा कि किसान भाई जैट्रोफा रोपण के द्वारा जैविक ईंधन की आपूर्ति कर पूर्ण विकसित भारत-2020 की प्रगति में अपना सहयोग दें। उन्होंने याद दिलाया कि वन महोत्सव का आरम्भ सन् 1954 में श्री के. एम. मुंशी द्वारा किया गया था। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि झाँसी जनपद में 3-5% वन क्षेत्र है जिसको 33% करने में कृषकों की भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

कार्यक्रम में डा. आर.वी. कुमार, वरिष्ठ वैज्ञाानिक ने जैट्रोफा (रतनजोत) के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गाँव गणेशगढ़ में जैट्रोफा के 4000 पौधों के रोपण की शुरूआत आज से है ।

कार्यक्रम में श्री राजीव कुमार गर्ग, वन संरक्षक, झाँसी ने अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ज्ञान केन्द्र -राष्ट्रीय कृषिवानिकी, शासन तंत्र से वन विभाग तथा ग्रामीण कृषकों के आपसी सहयोग द्वारा हम स्वस्थ पर्यावरण के लिए आवश्यक एक-तिहाई भूमि को वनाच्छादित कर पायेंगे।

ग्रासलैण्ड के विभागाध्यक्ष डा. एम.एम. राय ने गाँव में जाकर वन महोत्सव करने के प्रयास को सफल होने की शुभकामनाएं दी। वृक्षारोपण कार्यक्रम में ग्रासलैण्ड के डा. एस.के. गुप्ता एवं डा. जे.एन. गुप्ता ने भी भाग लिया ।

वन महोत्सव कार्यक्रम के दौरान समूह वार्ता, सवाल-जवाब तथा गोष्ठी का आयोजन किया गया । गाँव गणेशगढ़ के प्रगतिशील कृषक एवं पत्रकार श्री रामकुमार राजपूत के खेत में वृक्षा-रोपण का कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि सहित सभी ने जैट्रोफा (रतनजोत) का पौधा लगाया । कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिक तथा अधिकारीगण एवं वन विभाग के अधिकारीगण तथा गाँव देवगढ़, रामगढ़ तथा गणेशगढ़ के 52 कृषक एवं ग्रामीण महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया तथा सभी ने वन महोत्सव के तहत पौधे लगाये। कार्यक्रम में प्रगतिशील कृषक प्रभूदयाल राजपूत, बालकदास आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डा. आर.पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आभार डा. आर. के तिवारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया ।

स्टाफ अनुसंधान परिषद

डा. एस.के. ध्यानी, निदेशक की अध्यक्षता में 16वीं स्टाफ अनुसंधान परिषद की वार्षिक बैठक 26 से 28 जुलाई तथा 9 अगस्त, 2005 को सम्पन्न हुई। केन्द्र सभी वैज्ञानिकों ने उक्त बैठक में भाग लिया। मुख्य कार्यक्रमों में पांचों कार्यक्रम समन्वयकों द्वारा अपने-अपने कार्यक्रम की अनुसंधान कार्यो की संक्षिप्त आख्या प्रस्तुत की तथा सभी परियोजना समन्वयकों द्वारा अपनी-अपनी परियोजनाओं के अंतर्गत किये जा रहे वर्ष 2004-05 के अनुसंधान कार्यो की संक्षिप्त आख्या प्रस्तुत की।

Staff Research Council

XVIth Staff Research Council (SRC) meeting of National Research Centre for Agroforestry (NRCAF), Jhansi was held from 26th to 28th July 2005 and on 9th August 2005 under the Chairmanship of Dr. S. K. Dhyani, Director, NRCAF, Jhansi. All the Scientists of the Centre attended the meeting. Programme Leaders of five mega projects presented over view of their respective programmes in brief and all the project leaders presented research highlights of the projects for the period of 2004-05.

AICRP ON AGROFORESTRY WORKSHOP AT KARNAL BETWEEN 20th TO 22nd AUGUST, 2005

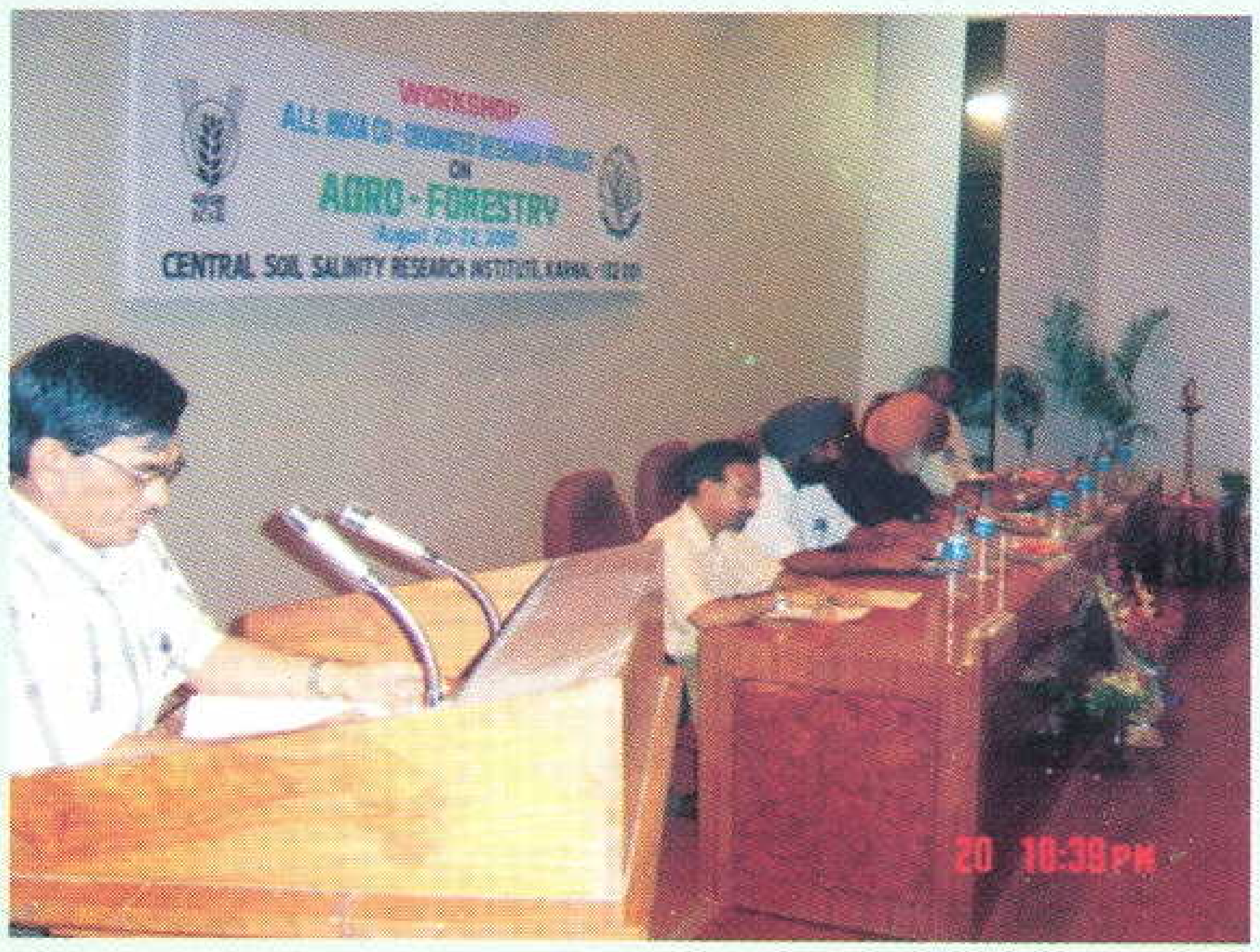

The workshop of All India Coordinated Research Project (AICRP) on Agroforestry was held at Central Soil Salinity Research Institute, Karnal from 20th to 22nd August, 2005. It was attended by more than eighty researchers representing thirty two centre of the project out of a total of thirty five centres. They include all the twenty five coordinating centers located in different State Agricultural Universities and seven ICAR Research Institutes in addition to the Principal Investigators of AP Cess Fund Research Project related to Agroforestry. Overall about 100 delegates participated in the workshop. Dr. J.S. Samra, Deputy Director General (Natural Resource Management), Indian Council of Agriculture Research, New Delhi, was the Chief Guest.

Dr. S.K. Dhyani, Project Coordinator of AICRP on Agroforestry and Director, NRC for Agroforestry, Jhansi highlighted the salient achievement of the project for the period under report. He focused on the priority areas for the future research in the project and emphasized that the scientist working in this project should play pivotal role in screening the superior

genotypes of Jatropha and karanj with higher oil content, developing complete package of practices for raising large scale plantation multiplication of the species and integration of these species in different agroforestry systems. He proposed to initiate a network project with a team of multidisciplinary scientist to study the cause of shisham and kikar mortality, its remedial measures and screening of the resistant germplasm. Dr. K.R. Solanki, ADG (AF), in his address put up the challenge before the researchers to look forward towards the role of agroforestry in livelihood security, poverty elimination, and employment generation. In addition, he urged the scientists to sensitize farmers about the role of quality planting material in increasing the productivity of the system strengthen institute-industry linkage and to tackle the issues of global warming and carbon sequestration.

Dr. J.S. Samra, DDG (NRM), informed that agriculture productivity is major issue before the Government, which has more or less stagnated in the recent past. To meet these challenges, farming system approach in totality has to be adopted. Agroforestry is an important component of farming system approach. If there is need to systematically analyse the agroforestry systems in different agroclimatic regions. He emphasized that the planning of agroforestry research should be to improve the socio-economic level of poor, landless and marginal farmers and women. There is need for more studies on carbon sequestration. The promotion of agroforestry will accelerate carbon balance when we go for carbon trading, as trees are big sequester of carbon.

During the workshop the Officer-in-Charge of coordinating centres presented the annual progress report of their respective centers. The Plenary session was presided over by Dr. K.R. Solanki in the afternoon of 22nd August. Dr. P.S. Pathak, Director, IGFRI, Jhansi was the Chief Guest of the function. Dr. P.S. Pathak, appreciated the achievements of the project. He told that work on indigenous species is our strength. There should be some difference in our approach when we treat agroforestry as livelihood security and when we work for entrepreneurs. For entrepreneurs we must think about market, economic viability etc. The AICRP on Agroforestry is different from other AICRPs as it pursue region specific research approach and thus there can not be uniform approach at all the centers. However, some uniform and specialized approach is needed for all the centers. At the end , Dr. S.K. Dhyani, proposed vote of thanks and thanked specially Dr. G.B. Singh, Director, CSSRI, Karnal for providing the facilities for the workshop.

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी में दिनांक **26-8-2005** को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्‌घाटन केन्द्र निदेशक, डा. एस. के. ध्यानी द्वारा किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री सत्येन्द्र सिंह, राजभाषा अधिकारी, मंडल रेल प्रबन्धक, झाँसी थे। कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य हिन्दी में सरकारी काम-काज करने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों की झिझक को दूर करना एवं हिन्दी को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र निदेशक डा. ध्यानी ने कहा कि हिन्दी का भविष्य काफी उज्जवल है और हम लोगों को सरकारी कामकाज करने के लिए दृढ़ संकल्पित होना पड़ेगा तभी हिन्दी का विकास होगा। उन्होंने कहा कि मन में कुंठा नही रखनी चाहिए, हम खुलकर हिन्दी भाषा का प्रयोग करें। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे सरकारी काम-काज अधिक से अधिक हिन्दी में करें । उन्होंने कहा कि हम लोगों को घबड़ाना नही चाहिए क्योंकि कभी-कभी प्रयास करने के बाद भी परिणाम देर से प्राप्त होते हैं इसलिए सतत् प्रयास करते रहना चाहिए। कार्यक्रम में केन्द्र के सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी श्री राम बाबू शर्मा ने अपने उद्‌बोधन में सभी से आग्रह किया कि वे अपना सरकारी काम-काज अधिक से अधिक हिन्दी में करें। उन्होंने यह भी अवगत कराया कि हम अधिकतर फाइलों पर टिप्पणी हिन्दी में ही करते हैं और भविष्य में भी हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत रहेंगे। कार्यशाला के आयोजक डा. आर.वी. कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कार्यशाला की महत्ता एवं इससे होने वाले लाभ के बारे में लोगों को बताया। उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यशाला में मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय, झाँसी से श्री सत्येन्द्र सिंह, राजभाषा अधिकारी एवं श्री एम.एम. भटनागर, राजभाषा अधीक्षक को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था।

श्री सत्येन्द्र सिंह, राजभाषा अधिकारी ने अपना व्याख्यान ''भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं नियम'' पर दिया। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी किये गये नियम कानून के बारे में विधिवत जानकारी दी और कहा कि हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहे है और इसके लिए अनेक प्रशिक्षण संस्थान भी खोले गये है जहाँ से हमलोग प्रशिक्षण लेकर इसका लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक प्रतिवेदन पर भी प्रकाश डाला जिसमें हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अनेक सुझाव एवं निर्देश दिये गये हैं।

कार्यशाला में श्री एम.एम. भटनागर, राजभाषा अधीक्षक, मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय, झाँसी ने अपना व्याख्यान

''पत्राचार एवं टिप्पणी प्रस्तुतिकरण'' पर दिया जिसमें उन्होंने सरकारी, गैर सरकारी, अर्धशासकीय पत्र एवं विभिन्न प्रकार के पत्र लेखन पर प्रकाश डाला। उन्होंने फाइलों पर टिप्पणी लिखने, मसौदे, कार्यालय आदेश, परिपत्र आदि पर विधिवत जानकारी दी।

उपरोक्त कार्यशाला में इस केन्द्र के प्रशासनिक एवं तकनीकी श्रेणी के लगभग 30 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा. आर.पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आभार डा. आर. वी. कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया।

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी में केन्द्र के निदेशक डा. एस. के. ध्यानी की अध्यक्षता में 14 सितम्बर, 2005 को हिन्दी सप्ताह का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डा.(श्रीमती) नीलम कलसी, प्राचार्या, गुरू हरकिशन महाविद्यालय, झाँसी थीं। इस अवसर पर केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। डा. आर. वी. कुमार, प्रभारी अधिकारी, हिन्दी ने हिन्दी में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्यक्रम के रूप एवं सीमाओं पर प्रकाश डालते हुए सभी का स्वागत किया। उन्होंने केन्द्र में विगत वर्षो में हुई प्रगति की आख्या प्रस्तुत की और सप्ताह भर होने वाले कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने माननीय कृषि मंत्री, भारत सरकार के संदेश एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा जारी अपील को पढ़कर सभी को सुनाया। इसके बाद हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। केन्द्र के विभिन्न वैज्ञानिकों ने कृषिवानिकी तकनीक को किसानों तक पहुँचाने के लिए हिन्दी में पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखने पर बल दिया जिससे किसान उसे पढ़कर कृषिवानिकी की आधुनिकतम जानकारी प्राप्त कर सकें। डा. ध्यानी, निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी को अवगत कराया कि केन्द्र द्वारा हिन्दी को बढावा देने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं जैसे कृषिवानिकी समाचार पत्र को द्विभाषी प्रकाशित किया जाना, केन्द्र के वार्षिक रिपोर्ट का सारांश हिन्दी में प्रकाशित किया जाना, पुस्तकों का हिन्दी मे लिखा जाना, शोध-पत्रों का हिन्दी में लिखा व पढ़ा जाना आदि। इसके अलावा प्रशासनिक कामकाज में भी अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग हो रहा है जैसे फाइलों पर टिप्पणी, परिपत्र, कार्यालय आदेश आदि। इसके साथ ही साथ किसानों को प्रशिक्षण भी हिन्दी में दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हिन्दी ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा कृषिवानिकी तकनीक का प्रचार प्रसार किया जा सकता है। निदेशक महोदय ने केन्द्र के

समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी में करें इसके लिए प्रोत्साहन/पुरष्कार का भी प्रावधान किया जायेगा।

दिनांक 15-9-2005 को केन्द्र में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। उपर्युक्त प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरष्कार देने का प्रावधान रखा गया था। इसमें श्री कुलदीप द्विवेदी को प्रथम, श्री रामबाबू शर्मा को द्वितीय एवं डा.अजय प्रताप राय को तृतीय पुरष्कार प्राप्त हुआ।

दिनांक 16-9-2004 को निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में केन्द्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों (चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को छोड़कर) ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में भी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को पुरष्कृत किया गया। इस प्रतियोगिता में श्री राम बाबू शर्मा को प्रथम, श्री सी.के. बाजपेयी को द्वितीय एवं श्री महेन्द्र कुमार को तृतीय पुरष्कार मिला।

दिनांक 17-9-2004 को शोध-पत्र पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें केन्द्र के 8 वैज्ञानिकों ने अपने शोध लेख; पोस्टर प्रारूपद्ध प्रस्तुत किये। निर्णायक मण्डल द्वारा समस्त शोध-पत्रों का गहन अध्ययन कर 3 शोध-पत्र को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरष्कार हेतु चयनित किया गया। इस प्रतियोगिता में डा. आर.एस. यादव को उनके शोध लेख ''परम्परागत कृषिवन पद्धतियों का मृदा सूक्ष्म जैविक जैवपुंज कार्बन एवं नत्रजन गतिकीय पर प्रभाव'' को प्रथम, डा. आर.वी. कुमार को उनके शोध लेख ''रतनजोत में लैकेज एन्जाईम की गतिविधियों के आधार पर अनुवांशिक विविधताओं का अध्ययन'' को द्वितीय एवं डा. ए.के. हाण्डा को उनके लेख 'एअर लेयरिंग द्वारा उपार्जित.....प्रभाव' को तृतीय घोषित किया गया।

दिनांक 17-9-2005 को ही सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के समस्त तकनीकी श्रेणी एवं प्रशासनिक श्रेणी के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें श्री सी.के. बाजपेयी प्रथम, श्री रामबाबू शर्मा द्वितीय एवं श्री राजेन्द्र सिंह को तृतीय पुरष्कार दिया गया। इसके बाद इमला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के समस्त तकनीक श्रेणी एवं प्रशासनिक श्रेणी के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में श्री सी. के. बाजपेयी को प्रथम, श्री रामबाबू शर्मा को द्वितीय तथा श्री हूबलाल तृतीय आये। तत्पश्चात् चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए आकस्मिक अवकाश लेखन प्रतियोगिता हुई जिसमें श्री रामसिंह प्रथम, श्री कामता प्रसाद द्वितीय तथा श्री रामदीन तृतीय रहे। दिनांक 19-9-2005 को अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रशासनिक शब्दों को अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करना था। इसमें श्री रामबाबू शर्मा प्रथम, श्री ओमप्रकाश द्वितीय एवं डा. ए. दत्ता तृतीय रहे। इसके बाद अहिन्दी भाषा क्षेत्रों के लिए भी अनुवाद प्रतियोगिता सम्पन्न की गई जिसमें श्री सी. शिवदासन प्रथम एवं डा. अरूनव दत्ता को द्वितीय पुरष्कार प्राप्त हुआ। पिछले एक साल के कार्यकाल में 20,000 या उससे अधिक शब्द हिन्दी में लिखने के लिए श्री वीरेन्द्र सिंह को प्रथम, श्री महेन्द्र कुमार को द्वितीय एवं श्री के.पी. शर्मा को तृतीय पुरष्कार दिया गया।

दिनांक 20-9-2004 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह केन्द्र निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निदेशक महोदय द्वारा प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरष्कार वितरित किये गये।

NEW PROJECT INITIATED

(1) Effect of Irrigation on Performance of Aonla Under Agroforestry Systems

Project Leader: Dr. R. K. Tewari

Associates: Dr. R. S. Yadav, Dr. A.K. Shanker and Dr. P. Rai

(2) Bio-Energy From *Prosopis juliflora* : Economics and Environmental Evaluation

Project Leader: Dr. K. Kareemulla

Associates: Dr. O. P. Chaturvedi and Dr. R.P. Dwivedi

(3) A Study on Economic Analysis of Aonla Based Agroforestry System in Eastern Uttar Pradesh and Bundelkhand Region

Project Leader: Dr. K. Kareemulla

Associates: Dr. R. K. Tewari

(4) Micro propagation of Elite Trees of Bamboo and Karanj

Project Leader: Dr. S. P. Ahlawat

Associates: Dr. R. V. Kumar, Dr. V. K. Gupta and Dr. A. K. Handa

(5) National Network on Integrated Development of Jatropa and Karanj

Project leader: Dr. R. V. Kumar

Associates: Dr. S. P. Ahlawat and Dr. V. K. Gupta

(6) Ad-hoc ICAR Net Work Project on Tree Borne Oil Seeds-

Project leader: Dr. V. K. Gupta

Associates: Dr. S. P. Ahlawat and Dr. R. V. Kumar

The General Body Meeting of Indian Society of Agroforestry at CSSRI Karnal

A General Body Meeting of the Indian Society of Agroforestry was held on 21st August, 2005 at CSSRI, Karnal about 50 members attended the meeting.

Executive Council of "Indian Society of Agroforestry"

After election of ISAF new executive council with following office bearer has been constituted for the period of 2005-08 at NRCAF, Jhansi.

President:	Dr. S. K. Dhyani
Vice President:	Dr. P. Rai
	Dr. K. R. Solanki
	Dr. S. D. Upadhyay
Secretary:	Dr. V. K. Gupta
Joint Secretary:	Dr. A. K. Handa
	Dr. R. S. Yadav
Editor in Chief :	Dr. O. P. Chaturvedi
Treasurer:	Dr. Ajit
Business Manager:	Dr. R. K. Tewari - Jhânsi
Members:	Dr. (Mrs.) Chitra Shanker - Jhansi
	Dr. S. J. Patil - Dharward
	Dr. Naresh Kaushik - Hissar
	Sh. R. H. Rizvi - Jhansi
	Dr. M. N. Nagouria - Raipur

मानव संसाधन विकास

- डा. एस.के. ध्यानी, निदेशक, एवं डा. ए.के. हाण्डा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 1 जुलाई, 2005 को प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन-II, नयी दिल्ली में आयोजित ए.पी. सेस फण्ड स्कीम की प्रोजेक्ट सिक्रिनिंग कमेटी की बैठक में भाग लिया।
- श्री आर.एच. रिजवी, वैज्ञानिक ने दिनांक 5 से 25 जुलाई, 2005 तक नार्म हैदराबाद में आयोजित जी.आई.एस. बेस्ड डिसिजन सर्पोट सिस्टम फार सस्टेनेविल एग्रीकल्चर विषय पर आयोजित ग्रीष्मकालीन स्कूल में भाग लिया।
- डा. एस.के. ध्यानी, निदेशक एवं परियोजना समन्वयक, डा. पी. राय, डा. वी.के. गुप्ता, डा. ओ.पी. चतुर्वेदी, प्रधान वैज्ञानिकों, डा. अनिल कुमार, डा. आर.के. तिवारी, डा. अजीत, डा. ए.के. हाण्डा, वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं श्री सी. शिवदासन निदेशक के निजी सचिव ने 20 से 22 अगस्त, 2005 तक सी. एस.एस.आर.आई., करनाल में अखिल भारतीय कृषि वानिकी समन्वयक परियोजना की कार्यशाला का आयोजन किया।
- डा. एस.पी. अहलावत, डा. ए.के. हाण्डा एवं डा. आर.वी. कुमार वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने दिनांक 29 अगस्त, 2005 को नई दिल्ली में लिक्विड बायोफियूल विषय पर साइटिफिक एण्ड टेक्नीकल एडवाइजरी पैनल कार्यशाला में भाग लिया।
- डा. आर.के. तिवारी वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 14 से 17 सितम्बर 2005 तक अन्डर यूटीलाइज्ड फ्रूटस विषय पर बी.ए.आई.एफ., पूना एवं आई.सी.यू.सी. (कोलम्बो) द्वारा आयोजित चार दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया एवं चिरोंजी फार न्यूट्रीशन सिक्योरिटी एण्ड रूरल लाइवलीहूड विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

Human Resource Development

- Dr. S. K. Dhyani, Director and Dr. A. K. Handa, Sr. Scientist attended Project Screening Committee Meeting of NRM Division (Agroforestry), ICAR for AP Cess Fund Scheme held on 1st July,2005 at KAB-II, New Delhi.
- Sh. R. H. Rizvi, Scientist attended a Summer School on" GIS Based Decision Support Systems For Sustainable Agriculture" at NAARM, Hydrabad during 5th-25th July,2005.
- Dr. S. K. Dhyani, Director and Project Coordinator; Dr. P. Rai, Pr. Scientist; Dr. V. K. Gupta, Pr. Scientist; Dr. O. P. Chaturvedi, Pr. Scientist; Dr. Anil Kumar, Sr. Scientist; Dr. R. K. Tewari, Sr. Scientist; Dr. Ajit, Sr. Scientist; Dr. A K Handa, Sr. Scientist and Sh. C. Shivdasan, P S to Director organized the"Workshop of AICRP on Agroforestry" at CSSRI, Karnal from 20th-22nd August, 2005.
- Dr. S.P. Ahlawat, Sr. Scientist, Dr. A. K. Handa, Sr. Scientist and Dr. R.V. Kumar, Sr. Scientist attended Scientific and Technical Advisory Panel Workshop on "Liquid Biofuel" held at New Delhi on 29th August, 2005.
- Dr. R. K. Tewari, Sr. Scientist of the Centre attended four days Workshop on "Under Utilized Fruits" from 14th-17th September, 2005 at BAIF, Pune organized by BAIF and ICUC (HQ. at Colambo) and presented paper on Chironjii for nutritional security and rural livelihood.

आगन्तुक

- डा. जे.एस. सामरा, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन-II नई दिल्ली-110012।
- डा. के.आर. सोलंकी, सहायक महानिदेशक (कृषिवानिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि अनुसंधान भवन-II नई दिल्ली- 110012।
- डा. पी.एस. वीसेन, डीन, एकेडेमिक प्लानिंग एण्ड डवलपमेंट, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
- श्री सुभाष गर्ग, 85, विजय नगर, सेक्टर-II ग्वालियर (म.प्र.)।
- श्री सत्येन्द्र सिंह, राजभाषा अधिकारी, मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय, झाँसी।
- श्री एम.एम. भटनागर, राजभाषा अधीक्षक, मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय, झाँसी।
- डा.(श्रीमती) नीलम कलसी, प्राचार्या, गुरू हरकिशन महाविद्यालय, झाँसी।

Visitors

- Dr. J.S. Samra, DDG (NRM), ICAR, KAB-II, New Delhi-110012.
- Dr. K.R. Solanki, ADG (AF), ICAR, KAB-II, New Delhi-110012.
- Dr. P.S. Bisen, Dean, Academic Planning & Development, Bundelkhand University, Jhansi.
- Sh. Subhash Garg, 85, Vijay Nagar, Sector-II, Gwalior (M. P.)
- Sh. Satyendra Singh, Rajbhasha Adhikari, Divisional Railway Office, Jhansi
- Sh. M.M. Bhatnagar, Rajbhasha Adhikshak, Divisional Railway Office, Jhansi
- Dr. (Mrs.) Neelam Kalsi, Principal, Guru Harkisan Degree College, Jhansi

पदोन्नति

- श्री दलवीर सिंह, वरिष्ठ लिपिक की पदोन्नति 2 सितम्बर 2005 से असिस्टेन्ट के पद पर हुयी।
- श्री महेन्द्र कुमार, कनिष्ठ लिपिक की पदोन्नति 2 सितम्बर 2005 से वरिष्ठ लिपिक के पद पर हुयी।

PROMOTION

- Sh. Dalbir Singh Rawat, Sr. Clerk promoted to the post of Assistant w.e.f. 2nd September, 2005
- Sh. Mahendra Kumar, Jr. Clerk promoted to the post of Sr. Clerk w.e.f. 2nd Sepember, 2005.

प्रकाशक : निदेशक, राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी
Published by : Director, National Research Centre for Agroforestry, Jhansi
दूरभाष / Phones : +91 (0517) 2730213, 2730214 फैक्स / Fax : +91 (0517) 2730364

दिशा निर्देश एवं मार्ग दर्शन : डा. एस. के. ध्यानी, निदेशक
Supervision & Guidance : Dr. S.K. Dhyani
संकलन एवं सम्पादन : आर.के. तिवारी, राजीव तिवारी एवं ओ.पी. चतुर्वेदी
Compiled & Edited : R.K. Tewari, Rajeev Tiwari and O.P. Chaturvedi

मुद्रक : मिनी प्रिन्टर्स, झाँसी. फोन : 2447831, 2446820, सेल : 94151 13108
Printed at : Mini Printers, Jhansi. Phones : 2447831, 2446820, Cell. 94151 13108